# RNA : Real News Analysis

# DAILY CURRENT AFFAIRS

UPSC, STATE PCS, SSC, RAILWAY, BANKING, DEFENCE,
और अन्य सभी सरकारी परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण

DATE
जनवरी
01
2025

Key Point

1. National News
2. International News
3. Govt. Mission, Apps
4. Awards & Honours
5. Sports News
6. Economic News
7. Newly Appointment
8. Defence News
9. Important Days
10. Technology News
11. Obituary News
12. Books & Authors

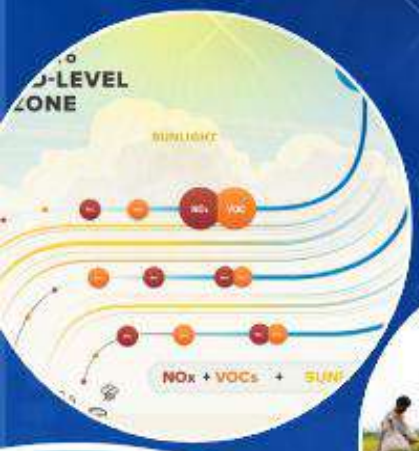

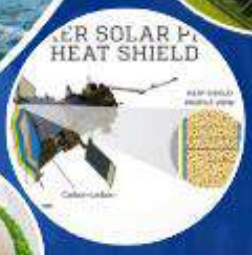

By Ankit Avasthi Sir

# पार्कर सोलर प्रोब / Parker Solar Probe

नासा के पार्कर सोलर प्रोब ने इतिहास रचते हुए सूरज के सबसे करीब पहुंचने का रिकॉर्ड बनाया है। यह अंतरिक्षयान सूरज के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी जुटाने के मिशन पर है और इससे सौर गतिविधियों को समझने में मदद मिलेगी।

**मुख्य बिंदु:**

1. **गति का नया रिकॉर्ड:**
   - पार्कर सोलर प्रोब ने लगभग 700,000 किमी/घंटा की गति से यात्रा की।
   - यह अब तक की मानव निर्मित सबसे तेज़ वस्तु बन गई है।
2. **कठोर परिस्थितियों का सामना:**
   - अंतरिक्षयान ने 1,400°C तक के उच्च तापमान को सहन किया।
   - तीव्र विकिरण से onboard इलेक्ट्रॉनिक्स प्रभावित हो सकते थे, लेकिन इसे सुरक्षित रखा गया।
3. **रिकॉर्ड-सेटिंग पास:**
   - यह मिशन तीन पास में से पहला है।
   - अगले पास 22 मार्च 2025 और 19 जून 2025 को निर्धारित हैं।
   - दोनों पास में अंतरिक्षयान सूरज के पास समान दूरी तक पहुंचेगा।
4. **लॉन्च और कक्षीय यात्रा:**
   - मिशन को 2018 में लॉन्च किया गया था।
   - शुक्र ग्रह के पास से गुजरते हुए गुरुत्वाकर्षण का उपयोग किया गया।
   - कक्षा को छोटा करते हुए अंतरिक्षयान को सूरज के करीब लाया गया।

**फ्लाईबाई का महत्व:**

1. **सूर्य के ताप को समझना:**
   - पता लगाना कि सूर्य के कोरोना का तापमान लाखों डिग्री तक कैसे बढ़ता है।
2. **सौर हवा का अध्ययन:**
   - सूर्य से निकलने वाले आवेशित कणों की निरंतर धारा (सौर हवा) की उत्पत्ति को ट्रेस करना।
3. **ऊर्जावान कणों की खोज:**
   - सूर्य के वायुमंडल में कणों के प्रकाश की गति के पास तक कैसे तेज़ होते हैं, इसे समझना।
4. **महत्वपूर्ण जानकारियां:**
   - इस मिशन से प्राप्त डेटा सौर घटनाओं की बेहतर समझ प्रदान करेगा।
   - यह अंतरिक्ष मौसम की भविष्यवाणी और सौर भौतिकी में मदद करेगा।
   - सौर ऊर्जा प्रक्रियाओं और सूर्य-पृथ्वी के संबंधों की समझ को भी बढ़ाएगा।

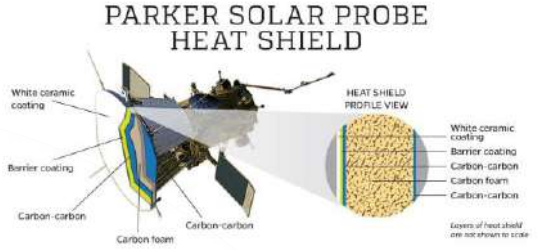


**पार्कर सोलर प्रोब:**

**परिचय:**

- **लॉन्च वर्ष**: 2018
- **मिशन संचालन**: नासा (National Aeronautics and Space Administration)
- **उद्देश्य**: सूर्य के बाहरी कोरोना का अवलोकन करना।

**उद्देश्य:**

1. **ऊर्जा प्रवाह का अध्ययन**: यह पता लगाना कि सूर्य का कोरोना लाखों डिग्री तक कैसे गर्म होता है।
2. **सौर वायु की संरचना का अध्ययन**: सौर वायु के प्रवाह और इसके त्वरण के पीछे के कारणों को समझना।
3. **प्लाज़्मा और चुंबकीय क्षेत्र का विश्लेषण**: उनकी संरचना और गतिकी का अध्ययन करना।
4. **ऊर्जा कणों के त्वरण का अध्ययन**: इन कणों के त्वरण और परिवहन के पीछे के तंत्र को खोजना।

**विशेषताएँ:**

- **सूर्य के सबसे करीब पहुंचने वाला यान**: यह अब तक का सूर्य के सबसे करीब पहुंचने वाला कृत्रिम यान बन गया है।
  - इसने शुक्र के गुरुत्वाकर्षण का उपयोग करके सूर्य के और पास की कक्षा में प्रवेश किया।
- **सौर ढाल (Solar Shield)**: सूर्य के तीव्र ताप और विकिरण से सुरक्षा के लिए विकसित।
  - सामग्री:
    - कार्बन-कार्बन कंपोजिट से बनी।
    - कोर: कार्बन फोम।
  - तापमान सहनशीलता: 1370°C से अधिक।

**वैज्ञानिक महत्व:**

- यह मिशन सूर्य की गहन समझ प्राप्त करने में एक बड़ी प्रगति का प्रतीक है।
- यह न केवल हमारे सूर्य के बारे में बल्कि ब्रह्मांड में अन्य तारों के काम करने के तरीके को समझने में भी मदद करेगा।

# भारत-ऑस्ट्रेलिया आर्थिक सहयोग और व्यापार समझौता / India-Australia Economic Cooperation and Trade Agreement

**भारत-ऑस्ट्रेलिया आर्थिक सहयोग और व्यापार समझौते (Ind-Aus ECTA)** को दो साल पूरे हो गए हैं। इस समझौते ने दोनों देशों में **MSMEs, व्यवसायों और रोजगार** के लिए नई संभावनाएं पैदा की हैं, जिससे द्विपक्षीय संबंधों को मजबूती मिली है।

## भारत-ऑस्ट्रेलिया ECTA पर मुख्य बिंदु:

1. **उत्पादन और आयात उपयोग:**
   - समझौते के दो साल पूरे होने पर, **निर्यात उपयोग 79%** और **आयात उपयोग 84%** तक पहुंचा।
2. **विकसित राष्ट्र का लक्ष्य:**
   - यह समझौता भारत के **2047 तक विकसित राष्ट्र बनने के विजन** के अनुरूप है।
3. **व्यापार में वृद्धि:** समझौते ने दोनों देशों के बीच आर्थिक और व्यापारिक सहयोग को मजबूत किया।

## भारत-ऑस्ट्रेलिया आर्थिक सहयोग और व्यापार समझौता (Ind-Aus ECTA):

1. **प्रारंभ और उद्देश्य:**
   - यह समझौता **29 दिसंबर 2022** से लागू हुआ।
   - व्यापार को बढ़ावा देने और सुधारने के लिए एक संस्थागत तंत्र प्रदान करता है।
2. **मुख्य विशेषताएं:**
   - **ऑस्ट्रेलिया का योगदान:**
     - 100% टैरिफ लाइनों पर **प्राथमिक बाजार पहुंच** प्रदान करता है।
     - भारत के **कपड़ा, चमड़ा और आभूषण** जैसे श्रम-प्रधान निर्यात क्षेत्रों को लाभ।
   - **भारत का योगदान:**
     - 70% से अधिक टैरिफ लाइनों पर प्राथमिक पहुंच प्रदान करता है।
     - इसमें ऑस्ट्रेलिया की रुचि के कच्चे माल और मध्यवर्ती वस्तुएं शामिल हैं, जैसे **कोयला, खनिज अयस्क और वाइन**।

## भारत-ऑस्ट्रेलिया व्यापार सेवाएं:

1. **ऑस्ट्रेलिया की प्रतिबद्धताएं:**
   - भारत के सेवा निर्यात के लिए **135 उप-क्षेत्र** प्रदान करता है।
   - 120 उप-क्षेत्रों में सर्वोत्तम favoured राष्ट्र (MFN) स्थिति प्रदान करता है।
2. **भारत की प्रतिबद्धताएं:** ऑस्ट्रेलिया की सेवाओं के लिए 103 उप-क्षेत्रों तक पहुंच प्रदान करता है।
3. **रणनीतिक साझेदारी:**
   - ऑस्ट्रेलिया भारत के लिए एक महत्वपूर्ण रणनीतिक साझीदार है और यह **क्वाड, त्रि-क्षेत्रीय आपूर्ति श्रृंखला पहल**, और **इंडो-पैसिफिक आर्थिक मंच (IPEF)** का हिस्सा है।

## भारत-ऑस्ट्रेलिया आर्थिक सहयोग:

1. **रणनीतिक साझेदारी:**
   - ऑस्ट्रेलिया भारत का एक महत्वपूर्ण **व्यापार और रणनीतिक साझीदार** है।
   - दोनों देश **इंडो-पैसिफिक आर्थिक मंच (IPEF)** और **त्रि-क्षेत्रीय आपूर्ति श्रृंखला लचीलापन पहल (SCRI)** का हिस्सा हैं, जो क्षेत्र में आपूर्ति श्रृंखला लचीलापन को मजबूत करने का लक्ष्य रखते हैं।
2. **प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI):**
   - **जनवरी-सितंबर 2023** में ऑस्ट्रेलिया से FDI **$307.2 मिलियन** रहा, जो 2022 के पूरे वर्ष में **$42.43 मिलियन** से सात गुना अधिक है।
   - **परामर्श सेवाओं** में FDI **$248 मिलियन** था, जो 2022 में $0.15 मिलियन था।
3. **व्यापारिक स्थिति:** FY23 में, **भारत ऑस्ट्रेलिया का 9वां सबसे बड़ा व्यापारिक साझीदार** था, और **ऑस्ट्रेलिया भारत का 13वां सबसे बड़ा व्यापारिक साझीदार** था।
4. **भविष्य का व्यापार:** भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच व्यापार **2035 तक $45-50 बिलियन** तक पहुंचने का अनुमान है।

## आगे का रास्ता:

1. **इंडो-पैसिफिक दृष्टिकोण को मजबूत करना:**
   - भारत और ऑस्ट्रेलिया एक **लचीला, समावेशी और खुला इंडो-पैसिफिक क्षेत्र** बनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं।
   - दोनों देश **QUAD, इंडो-पैसिफिक आर्थिक ढांचा (IPEF)**, और **आपूर्ति श्रृंखला लचीलापन पहल (SCRI)** के सक्रिय सदस्य हैं, जिसमें जापान भी शामिल है।
2. **व्यापक आर्थिक सहयोग समझौता (CECA):** ECTA के परिणामों को आगे बढ़ाने के लिए CECA पर बातचीत चल रही है, जिसका उद्देश्य **आर्थिक एकीकरण** और **रणनीतिक क्षेत्रों में सहयोग** को बढ़ाना है।
3. **भविष्य की व्यापारिक महत्वाकांक्षा:** दोनों देश **2030 तक द्विपक्षीय व्यापार को AUD 100 बिलियन** तक पहुंचाने का लक्ष्य बना रहे हैं।

# रक्षा मंत्रालय ने पनडुब्बी समझौता किया / Defence Ministry signs submarine deals

भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय ने हाल ही में दो सबमरीन परियोजनाओं के लिए लगभग 2,867 करोड़ रुपये के दो अनुबंधों पर हस्ताक्षर किए हैं। इन अनुबंधों का उद्देश्य भारतीय नौसेना की क्षमताओं को बढ़ाना और रक्षा प्रौद्योगिकी में देश की आत्मनिर्भरता को समर्थन प्रदान करना है।

## समझौतों के मुख्य बिंदु:

1. **'मेक इन इंडिया' पहल:**
   - दोनों समझौते 'मेक इन इंडिया' पहल के तहत हैं, जिसका मतलब है कि प्रोपल्शन सिस्टम और टॉरपीडो भारत में निर्मित होंगे।
2. **एयर इंडिपेंडेंट प्रोपल्शन (AIP) प्रणाली:**
   - पहला समझौता Rs 1,990 करोड़ का है, जिसे मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड (MDL), मुंबई के साथ हस्ताक्षरित किया गया है।
   - AIP प्रणाली डिफेंस रिसर्च एंड डेवलपमेंट ऑर्गनाइजेशन (DRDO) द्वारा स्वदेशी रूप से विकसित की जा रही है, जो पारंपरिक पनडुब्बियों की गोपनीयता और सहनशक्ति बढ़ाएगी।
3. **इलेक्ट्रॉनिक हैवी-वेट टॉरपीडो (EHWT) का एकीकरण:**
   - दूसरा समझौता Rs 877 करोड़ का है, जो भारतीय नौसेना, DRDO और नेवल ग्रुप (फ्रांस) के सहयोग से किया जाएगा।
   - इससे भारतीय नौसेना की कालवारी क्लास पनडुब्बियों की आग्नेय शक्ति को बढ़ावा मिलेगा।

## एयर इंडिपेंडेंट प्रोपल्शन (AIP) प्लग:

1. **AIP प्लग की तकनीक:**
   - यह एक उन्नत तकनीक है, जो गैर-परमाणु पनडुब्बियों में प्रयोग की जाती है।
   - AIP प्रणाली पनडुब्बियों को सतह पर आने की आवश्यकता को कम करती है।
2. **पनडुब्बी संचालन में सुधार:**
   - पारंपरिक डीजल-इलेक्ट्रिक पनडुब्बियों को डीजल इंजन चलाने और बैटरियां चार्ज करने के लिए सतह पर आना पड़ता है।
   - सतह पर आने से पनडुब्बी शत्रु द्वारा पहचानी जा सकती है, जिससे गुप्तता प्रभावित होती है।
3. **AIP का लाभ:**
   - AIP प्रणाली पनडुब्बियों को लंबी अवधि तक पानी के नीचे रहने की क्षमता देती है।
   - यह पनडुब्बी की गुप्तता और ऑपरेशनल क्षमता को बढ़ाता है।

## इलेक्ट्रॉनिक हैवी वेट टॉरपीडो (EHWT):

1. **EHWT की तकनीक:**
   - यह एक अत्याधुनिक हथियार है, जो पनडुब्बियों की अग्नि शक्ति को बढ़ाता है।
   - इसे F21 हैवी वेट टॉरपीडो के नाम से भी जाना जाता है।
2. **एल्यूमिनियम सिल्वर ऑक्साइड तकनीक:**
   - EHWT उन्नत एल्यूमिनियम सिल्वर ऑक्साइड तकनीक का उपयोग करता है।
   - यह तकनीक टॉरपीडो की रेंज और गति को बढ़ाती है।
3. **आधुनिक सुरक्षा:**
   - यह अन्य टॉरपीडो की तुलना में अधिक घातक है।
   - टॉरपीडो को डिजाइन करते समय सुरक्षा को प्राथमिकता दी गई है, जिससे पनडुब्बी में आग लगने या टॉरपीडो गिरने पर आकस्मिक विस्फोट की संभावना नहीं होती।

## रणनीतिक महत्त्व:

1. **भारत की रक्षा क्षमता में सुधार:**
   - ये उन्नत तकनीकें भारत के नौसेना बेड़े के आधुनिकीकरण और स्वदेशी रक्षा क्षमताओं के विकास में एक महत्वपूर्ण कदम साबित होती हैं।
   - यह कदम रक्षा प्रौद्योगिकी की वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं की अस्थिरता के दौर में भारत की आत्मनिर्भरता को बढ़ाता है।
2. **भारत की क्षेत्रीय शक्ति के रूप में स्थिति मजबूत करना:**
   - रक्षा प्रौद्योगिकी में आत्मनिर्भरता से भारत की क्षेत्रीय शक्ति के रूप में स्थिति मजबूत होती है।
   - यह भारत को वैश्विक शक्ति के रूप में एक मजबूत खिलाड़ी बनने में मदद करता है।
3. **पनडुब्बी क्षमताओं को बढ़ावा देना:**
   - पनडुब्बी क्षमताओं को बढ़ाकर भारत महत्वपूर्ण समुद्री मार्गों की सुरक्षा सुनिश्चित कर सकता है।
   - यह किसी भी प्रतिकूल नौसैनिक गतिविधि को रोकने और क्षेत्र में शक्ति संतुलन बनाए रखने में मदद करता है।

# ग्रीन स्टील मिशन / Green Steel Mission

सरकार इस्पात क्षेत्र में कार्बन उत्सर्जन को कम करने के लिए 15,000 करोड़ रुपये के 'ग्रीन स्टील मिशन' पर काम कर रही है। यह मिशन उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन योजना (PLI), नवीकरणीय ऊर्जा को अपनाने के लिए प्रोत्साहन और सरकारी संस्थाओं द्वारा ग्रीन स्टील की खरीद को अनिवार्य करने जैसे कदम शामिल करता है।

कार्बन उत्सर्जन:

कार्बन उत्सर्जन का मतलब वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड और मीथेन जैसी गैसों का निकलना है। ये ग्रीनहाउस गैसें हैं, जो ग्लोबल वार्मिंग बढ़ाने में योगदान करती हैं।

## भारत में इस्पात क्षेत्र:

### उत्पादन:

- 2023-24 में भारत की कच्चे इस्पात उत्पादन क्षमता 179.5 मिलियन टन तक पहुंच गई।
- 2023-24 में मिश्र धातु और गैर-मिश्र धातु सहित तैयार इस्पात का उत्पादन 139.15 मिलियन टन रहा, जो लगातार बढ़ रहा है।
- इस्पात उत्पादन में निजी क्षेत्र का दबदबा है, जो कुल कच्चे इस्पात उत्पादन का लगभग 83% योगदान देता है।

### राष्ट्रीय इस्पात नीति 2017:

- उन्नत तकनीकी और वैश्विक प्रतिस्पर्धा वाला इस्पात उद्योग बनाने का लक्ष्य।
- 2030-31 तक 300 मिलियन टन उत्पादन क्षमता प्राप्त करने का लक्ष्य।

### इस्पात की खपत:

- अप्रैल-अक्टूबर 2024 के दौरान तैयार इस्पात की कुल खपत लगभग 75.6 मिलियन टन रही।
- वित्तीय वर्ष 2023 में प्रति व्यक्ति इस्पात खपत 86.7 किलोग्राम दर्ज की गई।

## इस्पात उद्योग में हरित बदलाव के लाभ:

### 1. स्वास्थ्य और पर्यावरण संरक्षण:

- प्रदूषण कम होने से वायु और जल की गुणवत्ता में सुधार होगा।
- स्थानीय समुदायों के स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा और पर्यावरणीय क्षरण रोका जा सकेगा।

### 2. वैश्विक जलवायु लक्ष्यों में योगदान:

- कार्बन उत्सर्जन घटाकर वैश्विक तापमान वृद्धि को सीमित करने में मदद मिलेगी।
- यह पेरिस समझौते के तहत जलवायु लक्ष्यों को पूरा करने में सहायक होगा।

### 3. रोजगार और आर्थिक विकास:

- ग्रीन स्टील तकनीकों और नवीकरणीय ऊर्जा में निवेश से नए रोजगार के अवसर पैदा होंगे।
- उद्योग का दीर्घकालिक आर्थिक विकास सुनिश्चित होगा।

## ग्रीन स्टील मिशन:

इस्पात क्षेत्र को कार्बन मुक्त बनाना और 2070 तक भारत के नेट-जीरो उत्सर्जन लक्ष्य के साथ इसे संरेखित करना।

## मुख्य घटक:

1. **ग्रीन स्टील के लिए उत्पादन-लिंक्ड प्रोत्साहन (PLI) योजना:**
   - ग्रीन स्टील के उत्पादन को बढ़ावा देना।
   - निवेश आकर्षित करना और विशेष इस्पात के घरेलू उत्पादन को बढ़ावा देना।
   - आयात पर निर्भरता कम करना।
2. **नवीकरणीय ऊर्जा के लिए प्रोत्साहन:**
   - इस्पात उत्पादन में नवीकरणीय ऊर्जा के उपयोग को बढ़ावा देना।
   - इस्पात उद्योग के कार्बन फुटप्रिंट को कम करने में मदद करना।
3. **सरकारी एजेंसियों के लिए अनिवार्यता:**
   - सरकारी एजेंसियों को ग्रीन स्टील की खरीद करना अनिवार्य।
   - इससे ग्रीन स्टील की मांग बढ़ेगी और उद्योग को अधिक स्थायी प्रक्रियाओं की ओर बढ़ने में मदद मिलेगी।

## इस्पात उद्योग में डिकार्बोनाइजेशन को बढ़ावा देने वाली नीतियां:

- स्टील स्क्रैप रीसाइक्लिंग नीति (2019)
- वाहन स्क्रैपिंग नीति (2021)
- राष्ट्रीय सोलर मिशन (2010)
- परफॉर्म, अचीव एंड ट्रेड (PAT) योजना
- राष्ट्रीय ग्रीन हाइड्रोजन मिशन
- ग्रीन स्टील टैक्सोनॉमी
- कार्बन क्रेडिट ट्रेडिंग योजना (CCTS) (2023)
- ग्रीन स्टील मिशन के तहत पायलट प्रोजेक्ट्स

# भारत का रक्षा निर्यात / India's Defence Exports

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने बताया कि भारत के रक्षा निर्यात ने ₹21,000 करोड़ का रिकॉर्ड पार कर लिया है, जो एक दशक पहले ₹2,000 करोड़ था।
उन्होंने कहा कि 2029 तक रक्षा निर्यात को ₹50,000 करोड़ तक पहुंचाने का लक्ष्य रखा गया है।

**मुख्य बिंदु:**

1. **रक्षा निर्यात में वृद्धि और लक्ष्य:**
   - भारत का रक्षा निर्यात ₹2,000 करोड़ से बढ़कर ₹21,000 करोड़ हो गया है।
   - 2029 तक ₹50,000 करोड़ का लक्ष्य।
   - स्वदेशी रक्षा उपकरणों का निर्यात बढ़ा।
2. **नई युद्ध विधाओं और प्रशिक्षण:**
   - सूचना युद्ध, एआई आधारित युद्ध, साइबर हमले जैसी नई चुनौतियों का सामना।
   - सैनिकों को उन्नत प्रशिक्षण देने की आवश्यकता।
3. **सैन्य एकजुटता और अंतरराष्ट्रीय संबंध:**
   - तीनों सेनाओं के बीच समन्वय बढ़ाने की योजना।
   - मोरक्को ने भारतीय रक्षा कंपनियों को निवेश के लिए आमंत्रित किया।

**भारत की रक्षा क्षेत्र में प्रगति के मुख्य पहलू:**

1. **रक्षा निर्यात में वृद्धि:**
   - भारत के रक्षा निर्यात में पिछले छह वर्षों (FY24 तक) में लगभग 28% की सीएजीआर से वृद्धि दर्ज की गई है।
   - अगले पांच वर्षों (FY24 से FY29) में रक्षा निर्यात 19% की दर से बढ़ने का अनुमान है।
   - निर्यात में विमान, नौसैनिक प्रणाली, मिसाइल तकनीक, और सैन्य उपकरण जैसे उत्पाद शामिल हैं।
2. **स्वदेशी निर्माण को बढ़ावा:**
   - 'मेक इन इंडिया' जैसी पहलों के जरिए भारत रक्षा उत्पादन में आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहा है।
   - विदेशी आपूर्तिकर्ताओं पर निर्भरता घटाकर, भारत अपनी रक्षा क्षमताओं को सशक्त बना रहा है।
3. **रक्षा बजट का आवंटन:**
   - भारत का रक्षा बजट लगातार 1.90% से 2.8% तक GDP का हिस्सा रहा है।
   - 2024-25 वित्तीय वर्ष के लिए रक्षा क्षेत्र के लिए 6.22 लाख करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है।

**भारत का रक्षा निर्यात:**

**लक्ष्य और उपलब्धियां:**

- 2028-29 तक ₹50,000 करोड़ रक्षा निर्यात का लक्ष्य।
- FY 2023-24 में ₹21,083 करोड़ का निर्यात, पिछले वित्तीय वर्ष से 32.5% की वृद्धि।

**निर्यात में योगदान:**

- निजी क्षेत्र का हिस्सा 60%, जबकि DPSUs का 40%।
- भारत के लगभग 100 स्थानीय फर्म 85 देशों को रक्षा सामग्री निर्यात कर रहे हैं।

**मुख्य आयातक देश:**

- 2000 से 2023 के बीच म्यांमार 31% निर्यात के साथ सबसे बड़ा आयातक।
- इसके बाद श्रीलंका (19%), मॉरीशस, नेपाल, आर्मेनिया, वियतनाम और मालदीव।

**रक्षा उत्पादन में वृद्धि:**

- 2016-17 में ₹74,054 करोड़ से बढ़कर 2022-23 में ₹1,08,684 करोड़।
- इसमें से 21.96% उत्पादन निजी कंपनियों द्वारा।

**रक्षा उत्पादन से जुड़ी चुनौतियां:**

1. निजी क्षेत्र की सीमित भागीदारी।
2. गुणवत्ता और अंतरराष्ट्रीय मानकों की कमी।
3. वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धा।
4. इन्फ्रास्ट्रक्चर की कमी।
5. अनुसंधान और विकास (R&D) में निवेश की कमी।
6. विदेशी आयात पर निर्भरता।
7. सशस्त्र बलों और उद्योगों के बीच समन्वय की कमी।

**आगे की राह:**

1. रक्षा निर्यात से प्राप्त राजस्व का उपयोग अनुसंधान बजट और पूंजीगत व्यय बढ़ाने में।
2. चीन की असंगत निर्यात नीति और भू-राजनीतिक अवसरों का उपयोग।
3. अंतरराष्ट्रीय मानकों का पालन कर उत्पाद की गुणवत्ता और विश्वास बढ़ाना।
4. सार्वजनिक-निजी भागीदारी को प्रोत्साहन और अंतरराष्ट्रीय विपणन में निवेश।

# भारत की रोहिंग्या शरणार्थी नीति / India's Rohingya refugee policy

भारत की रोहिंग्या शरणार्थी नीति एक रिपोर्ट के कारण फिर से चर्चा में आ गई है, जिसमें देशभर के हिरासत केंद्रों में रह रहे रोहिंग्या शरणार्थियों की दयनीय स्थिति को उजागर किया गया है।

**रिपोर्ट के मुख्य बिंदु (Rohingya Refugees पर रिपोर्ट):**

1. **संयुक्त रिपोर्ट:**
   - यह रिपोर्ट The Azadi Project (एक अमेरिकी गैर-लाभकारी संस्था) और Refugees International द्वारा संयुक्त रूप से तैयार की गई है।
2. **मानवाधिकारों का उल्लंघन:**
   - रिपोर्ट में संविधान और मानवाधिकारों के "गंभीर उल्लंघन" को उजागर किया गया है।
   - भारत की अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार संधियों के तहत अपनी जिम्मेदारियों को निभाने में असफलता की आलोचना की गई है।
3. **अपराध के बावजूद हिरासत:**
   - कई रोहिंग्या शरणार्थी अपनी सजा पूरी करने के बाद भी हिरासत में हैं।
   - हिरासत में बंद व्यक्तियों, उनके परिवारों और कानूनी प्रतिनिधियों के साथ साक्षात्कार में यह खुलासा हुआ।
4. **दयनीय स्थिति:**
   - हिरासत केंद्रों में रोहिंग्या शरणार्थियों की जीवन स्थितियां बेहद खराब और अमानवीय हैं।
5. **आवश्यकता:**
   - भारत की नीति और व्यवहार में सुधार की आवश्यकता को रेखांकित किया गया है।

**रोहिंग्या: एक परिचय-**

**पृष्ठभूमि:**

- **जातीय समूह**: रोहिंग्या एक मुस्लिम बहुल जातीय समूह हैं जो मुख्य रूप से म्यांमार के पश्चिमी प्रांत राखाइन में रहते हैं।
- **भाषा**:
  ये बांग्ला भाषा की एक बोली बोलते हैं, जो म्यांमार की आम भाषा बर्मी से अलग है।

**नागरिकता और अधिकार:**

- **नागरिकता से वंचित**: म्यांमार सरकार रोहिंग्या को पूर्ण नागरिकता प्रदान नहीं करती है।
  उन्हें औपनिवेशिक समय के प्रवासी माना जाता है, जबकि वे देश में लंबे समय से निवास कर रहे हैं।
- **आजीविका और अधिकारों का हनन**:
  - रोहिंग्या समुदाय को सरकारी सेवाओं में भागीदारी से वंचित रखा जाता है।
  - राखाइन राज्य के बाहर उनकी आवाजाही पर सख्त प्रतिबंध है।

**रोहिंग्या शरणार्थियों से जुड़े मुद्दे:**

**1. भारत में शरणार्थी नीति की अनुपस्थिति:** भारत में कोई मानकीकृत शरणार्थी नीति नहीं है, जिसके कारण शरणार्थियों के साथ भेदभावपूर्ण व्यवहार होता है।

**2. मनमानी गिरफ्तारी और कैद:** रोहिंग्या शरणार्थी, जो UNHCR (संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी उच्चायुक्त) के तहत पंजीकृत हैं, को अन्य समूहों (जैसे तिब्बती और श्रीलंकाई शरणार्थी) के विपरीत, मनमाने तरीके से हिरासत में लिया जाता है और आपराधिक मामलों में फंसाया जाता है।

**3. नागरिकता संशोधन अधिनियम, 2019 का प्रभाव:** सीएए, 2019 मुसलमानों को लाभों से बाहर रखता है, जिससे रोहिंग्या जैसे समुदाय हाशिए पर चले जाते हैं।

- यह अधिनियम गैर-मुस्लिम धार्मिक अल्पसंख्यकों को नागरिकता प्रदान करता है, लेकिन रोहिंग्या इसके दायरे में नहीं आते।

**4. कानूनी प्रतिनिधित्व की कमी:** धन की कमी और सिविल सोसाइटी संगठनों के एफसीआरए लाइसेंस रद्द किए जाने के कारण, रोहिंग्या शरणार्थियों को कानूनी सहायता प्राप्त करने में कठिनाई होती है।

**5. दमनकारी हिरासत परिस्थितियाँ:**

- हिरासत केंद्रों की स्थिति अत्यंत दयनीय है:
  - भीड़भाड़ वाले और अमानवीय रहने की स्थितियाँ।
  - बुनियादी सुविधाओं और सम्मानजनक जीवन स्तर का अभाव।

**भारत का रुख और अंतरराष्ट्रीय दायित्व:**

**1. भारत की स्थिति**

- भारत ने 1951 शरणार्थी सम्मेलन पर हस्ताक्षर नहीं किए हैं।
- विदेशी अधिनियम, 1946 और पासपोर्ट अधिनियम, 1967 के तहत रोहिंग्या शरणार्थियों को "अवैध प्रवासी" माना जाता है।

**2. अंतरराष्ट्रीय दायित्व:**

- भारत ICCPR का सदस्य है, जो नॉन-रिफाउलमेंट के सिद्धांत का पालन करने की अपेक्षा करता है।
- भारत ने बाल अधिकार सम्मेलन और नस्लीय भेदभाव उन्मूलन सम्मेलन को भी मंजूरी दी है।
- कन्वेंशन अगेंस्ट टॉर्चर पर हस्ताक्षर किए हैं लेकिन इसे अनुमोदित नहीं किया है।

**3. नॉन-रिफाउलमेंट का सिद्धांत:** किसी को ऐसे स्थान पर निर्वासित करने से रोकता है, जहाँ यातना या अमानवीय व्यवहार हो सकता है।

# ज़मीनी स्तर पर ओजोन प्रदूषण / Ground-level Ozone Pollution

राष्ट्रीय हरित अधिकरण (NGT) ने केंद्र सरकार से दिल्ली में ओजोन स्तर को नियंत्रित करने के लिए केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (CPCB) की सिफारिशों के कार्यान्वयन पर जवाब मांगा है।

## CPCB रिपोर्ट के मुख्य निष्कर्ष:

1. **मानकों से अधिक ओज़ोन स्तर:**
   - कई निगरानी स्टेशनों पर ओज़ोन का स्तर राष्ट्रीय मानक (100 $\mu g/m^3$, 8 घंटे) से अधिक पाया गया।
2. **उच्चतम स्तर:**
   - नेहरू नगर: 224.9 $\mu g/m^3$ (56 दिन)
   - पटपड़गंज: 188.3 $\mu g/m^3$ (45 दिन)
   - आरके पुरम: 175.4 $\mu g/m^3$ (अप्रैल-मई 2023 में खतरनाक स्तर)
   - अरविंदो मार्ग: 38 दिनों तक ऊंचे स्तर दर्ज किए गए।
3. **ट्रैफिक-प्रभावित क्षेत्र:**
   - भारी ट्रैफिक वाले क्षेत्रों में अप्रैल-मई 2023 के दौरान खतरनाक ओज़ोन स्तर देखे गए।
4. **प्रमुख कारण:**
   - वाहनों से उत्सर्जन, बायोमास जलाना, औद्योगिक गतिविधियां।
   - सीमा पार उत्सर्जन और जैविक स्रोत भी योगदान देते हैं।

## जमीनी स्तर का ओजोन प्रदूषण क्या है?

1. **परिभाषा:**
   - जमीनी स्तर का ओजोन ($O_3$) पृथ्वी की सतह के पास बनने वाला ओजोन है, जो वायुमंडल में रासायनिक प्रतिक्रियाओं से बनता है।
   - यह समताप मंडल में मौजूद सुरक्षात्मक ओजोन परत से अलग है और एक हानिकारक प्रदूषक के रूप में कार्य करता है।
2. **स्वास्थ्य और पर्यावरण पर प्रभाव:**
   - जमीनी स्तर का ओजोन गंभीर स्वास्थ्य खतरों और पर्यावरणीय क्षति का कारण बनता है।
3. **निर्माण प्रक्रिया:**
   - प्रकार: यह एक द्वितीयक प्रदूषक है (प्रत्यक्ष रूप से उत्सर्जित नहीं होता)।
   - रासायनिक प्रतिक्रिया: यह नाइट्रोजन ऑक्साइड (NOx) और वाष्पशील कार्बनिक यौगिकों (VOCs) के बीच प्रतिक्रियाओं से बनता है।
   - स्रोत:
     - NOx: वाहन, पावर प्लांट, औद्योगिक प्रक्रियाएँ।
     - VOCs: वाहन, पेट्रोल पंप, सॉल्वेंट, कचरा जलाना।
   - स्थिति: सूर्य के प्रकाश की उपस्थिति में यह प्रतिक्रिया होती है, जिससे ओजोन का निर्माण धूप वाले और गर्म दिनों में अधिक होता है।

## जमीनी स्तर के ओजोन प्रदूषण का प्रभाव:

1. **स्वास्थ्य प्रभाव:**
   - **स्वसन समस्याएँ:** जमीनी स्तर का ओजोन श्वसन समस्याओं का कारण बनता है और अस्थमा और हृदय रोग जैसी स्थितियों को और बढ़ाता है।
   - **दीर्घकालिक प्रभाव:** लगातार ओजोन के संपर्क में आने से फेफड़ों की क्षमता घट सकती है और स्थायी क्षति हो सकती है।
   - **2050 तक संभावित परिणाम:** अगर उत्सर्जन को नियंत्रित नहीं किया गया, तो भारत में 2050 तक ओजोन के संपर्क में आने से एक मिलियन से अधिक मौतें हो सकती हैं।
2. **पर्यावरणीय प्रभाव:**
   - **कृषि पर प्रभाव:** ओजोन फसलों को नुकसान पहुँचाता है, जिससे कृषि उत्पादन में कमी आती है।
   - **वनों पर प्रभाव:** ओजोन पेड़ों की वृद्धि और प्रकाश संश्लेषण को प्रभावित करता है, जिससे वनस्पति जीवन पर बुरा असर पड़ता है।

## ओजोन नियंत्रण के लिए सुझाव:

1. **प्रमुख अवयवों का नियंत्रण:**
   ओजोन नियंत्रण मुख्य रूप से इसके उत्प्रेरकों को कम करके प्राप्त किया जा सकता है, जैसे कि नाइट्रस ऑक्साइड (NOx), वाष्पशील कार्बनिक यौगिक (VOCs), मीथेन, और कार्बन मोनोऑक्साइड (CO)।
2. **स्थानीय नियंत्रण की सीमाएं:**
   उत्प्रेरकों का स्थानीय स्तर पर नियंत्रण ओजोन स्तरों को महत्वपूर्ण रूप से कम नहीं कर सकता है, क्योंकि ओजोन और इसके उत्प्रेरक दोनों लंबी दूरी तक यात्रा कर सकते हैं।
3. **राष्ट्रीय स्तर पर पहल:**
   इन उत्प्रेरकों को प्रभावी ढंग से नियंत्रित करने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर पहल और नीतियाँ आवश्यक हैं।

"GET READY FOR A WILD RIDE OF KNOWLEDGE !"

# SUBSCRIBE OUR NEW YOUTUBE CHANNEL

# ANKIT AVASTHI

**Video will be upload soon !**

RRB NTPC
TEST SERIES
100+ Mock Test
78 Sectional Test
40+ years PYPs
60+ Current affairs
TEST
Only
99
Per
Year
Buy Now

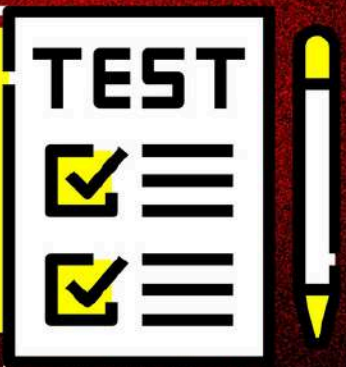

# GA FOUNDATION

Hand Written Notes

Apni Pathshala
एक कदम उज्ज्वल भविष्य की ओर

Ankit Inspires India

₹ Only 1999

4 पुस्तकों का सम्पूर्ण सेट

अधिक जानकारी के लिए दिए गए नंबर पर संपर्क करें....

7878158882

# APNI PATHSHALA

## UPPSC,RO/ARO,BPSC,UP TEST SERIES

### UPPSC
( TEST SERIES )
- 35+ MOCK TESTS
- 40+ PYQ'S
- 180+ TOPIC WISE TEST
- 60+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 299/- YEAR

### RO/ARO
( TEST SERIES )
- 50+ MOCK TESTS
- 30+ PYQ'S
- 10+ TOPIC WISE TEST
- 65+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 299/- YEAR

### BPSC
( TEST SERIES )
- 50+ MOCK TESTS
- 30+ PYQ'S
- 10+ TOPIC WISE TEST
- 65+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 299 YEAR

### SSC ( TEST SERIES )
- 30 MOCK TESTS
- 28+ YEAR PYP
- 12 SECTIONAL TEST
- 60+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 99/- YEAR

### RPF ( TEST SERIES )
- 40 MOCK TESTS
- 2 YEAR PYQ'S
- 4 SECTIONAL TEST
- 10 PRACTICE TEST
- 60 CURRENT AFFAIRS

ONLY 99/- YEAR

**Download** | Application

**Apni Pathshala**

7878158882

Apni.Pathshala Avasthiankit

AnkitAvasthiSir kaankit

ANKIT AVASTHI SIR

# NCERT COMPLETE

## FOUNDATION BATCH

FOR ALL

- POLITY
- ECONOMICS
- HISTORY
- GEOGRAPHY

- DAILY LIVE CLASSES
- , WEEKLY TEST
- CLASSES PDF (HINDI+ENGLISH)
- LIVE DOUBT SESSIONS
- DAILY PRACTISE PROBLEM

Rs 4999/-

Apni Pathshala 7878158882 Apni.Pathshala kaankit AnkitAvasthiSir Avasthiankit

ONLY
POLITY
1499
RS
DAILY LIVE CLASSES
, WEEKLY TEST
CLASSES PDF (HINDI+ENGLISH)
LIVE DOUBT SESSIONS
DAILY PRACTISE PROBLEM
Apni Pathshala
7878158882
Apni.Pathshala
kaankit
AnkitAvasthiSir
Avasthiankit

# SSC TEST SERIES

## CGL, CHSL, MTS, CET, CPO, GD,

## Stenographer (Grades C & D)

Only at

**99/-Year**

Enroll Now !